

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
माध्यमिक स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject :	हिन्दी	
विषय कोड Subject Code :	002	
परीक्षा का दिन एवं तिथि Day & Date of the Examination :	08.03.2016 / संगल	
उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper :	हिन्दी	
प्रश्न पत्र के क्रमांक कोड को दर्शाएँ : Write code No. as written on the top of the question paper :	Code Number 3	Set Number ① ② ③ ④
अतिरिक्त उत्तर-पुरिलका (ओं) की संख्या No. of supplementary answer-book(s) used		
विकलांग व्यक्ति : Person with Disabilities :	हौं / नहीं	No
किसी शारीरिक अवस्था से प्रभावित हो सो संबंधित वर्ग में <input checked="" type="checkbox"/> का निशान लगाएँ। If physically challenged, tick the category		
<input type="checkbox"/> B <input type="checkbox"/> D <input type="checkbox"/> H <input type="checkbox"/> S <input type="checkbox"/> C <input type="checkbox"/> A		
B = दृष्टिहीन, D = मूँह व श्विर, H = शारीरिक ऊपर से विकलांग, S = स्पास्टिक C = डिस्लोकिंसिक, A = ऑटिस्टिक B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic		
क्या लेखन - लिपिक उपलब्ध कराया गया : हौं / नहीं		
Whether writer provided : Yes / No		
यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सॉफ्टवेयर का नाम : If Visually challenged, name of software used		
*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो फैल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें। Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.		
कार्यालय उपयोग के लिए Space for office use		8115615 002/00274

छ3. 'क'

- क) वेशान्वगत स्तम्भाव की अपने विवेक और बुद्धि से बहुत सकते हैं।
- ख) बुद्धि में सुक्षम परिवर्तन लाकर
- ग) चैतन्य मरितक
- घ) अप-चैतन्य मरितक जन्म से पहले ही काम करना शुरू कर देता है।
- ज) चैतन्य मरितक की



- क) नेपाल में आया भूकंप थार हो आया।
- ख) खरहरा स्तंभ भूकंप में तहस- नहस हो गया।
- ग) उनका काम-चंचा तुम हो गया होगा।
- घ) बुद्धि, रीजिस्टर के लिए बाहर जाकर कम करते हैं।
- ज) काम मांड़ की थापा।

3) उत्तर:-

- क) iii) गरीब और अमीर लोगों का विवेक
- ख) ii) विषमता और शोदशाव
- ग) ii) ऑफीस में दुष्करती

- 4)  → iii) वे शोषण के गुणों को फोड़ सकते हैं।
ii) वे अपने शोषण के कारे में बताते हुए उसे लिया जाता है।

5) उत्तर:

- i) विरोध रखने का अनुरोध ✓
ii) शाकितवाली शासक ✓
iii) मिट्टी और लौह उग्र उत्तर देती है। ✓
iv) गरीबों तक सुविळम्ब प्रदान करती है। ✓
v) चोरों और अप्रतापारयों की विवाद

उत्तर :- 'अ'

5) क्रूरता:- मिश्र वाडा ✓

6) क्रूरता:- गांधी जी ने जो नमक

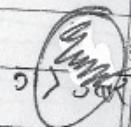
उत्तर:- थलापी भूमध्य गांधी जी ने नमक कर की साफ़ - साफ़ देखा था, तथापि वो

भान्धार था।

7) उत्तर:- भारत के सामने चुरल्या समस्या बढ़ती जनसंख्या है।

Ques:- तुलसीदास ने 'रामाचरितमानस' की रचना की

Ans:- इतनी गमी में कौसि बहुत है।



Ques:- हमारे हारा इतना आर नहीं सहा जा सकता है।

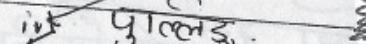
Ans:- अब राष्ट्रपति हारा नहीं आया जाएगा।

Ques:- प्रिलालिकारी की → ① संज्ञा



ii) ज्ञातीवाचक संज्ञा

iii) रक्तचन



iv) पुळिङ्ग

प्रमुख → ① विशेषण

i) गुणवाचक विशेषण

ii) विशेषण :- लीडा

iii) पुळिङ्ग

लुलाया गया → i) क्रिया
 ii) संकरित क्रिया
 iii) कर्मवाच्य

→ ① सर्वनाम
 ② पुरुष पत्रक
 ③ प्रथम पुरुष
 ④ पुलिंड़ि
 ⑤ एकत्रित

⑥ क्रमांक: गतस्त्रिय रस



ख) उत्तर: बतरस लोलच लाल की, मुरली धरी नुकाये,
 सौंह करे, शाहन हूँसे, देन कहे नटीजाए।

ग) उत्तर: शोक

घ) उत्तर: विभ्रत्स रस

खंड - 'ग'

प्र) कृत्तरः उस्ताद बिरसिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शाहनाई वादक प्य । जिन्हे
संगीत के लिए भारत रत्न से नवाजा गया है ।
बिरसिल्ला खाँ साहब ने बालाजी के मंदिर की इयोटी
पर बैठकर अपने मामा अलीबक्शा व नाना से शाहनाई सीखा करते
प्य । खाँ साहब के पुश्तेन्द्रियों ने उन्हीं अहीं बैठकर शाहनाई लजाते या
सीखते थे ।

ख) कृत्तरः रसूलनबाई और बतूलनबाई के घण्ठों से हीकर बालाजी के मंदिर जाना
बिरसिल्ला खाँ की अच्छा लगाता था क्योंकि :-

i) खाँ साहब की संगीत की आराम्भिक शिक्षा इन्हीं सबों के गानों,
तालों से मिली थी ।

ii) इस रास्ते पर जाने कितने तरह के बौल-बनार कशी दुमरी, कशी
टख्पे, कशी दादरा सुनाई देता था, जो उन्हें संगीत की शिक्षा
देता था ।

iii). उन्हें अपने जीवन के आराम्भिक दिनों में संगीत के प्रति आकर्षण

इन्हीं गायिका वर्षों की सुनकर मिली हैः

ग) उत्तरः > 'रियाज़' का अर्थ हैः अश्यास, जो हमें प्रतिदिन मैहनत करके प्राप्त होती हैः वह अश्यास का ही परिणाम हैः

- 10) क) उत्तरः > मन्त्र फ्रंडारी के पिता की निम्नलिखित विशेषताएँ अनुकरणीय हैः-
- गरीब वर्षों की वर से बढ़ा कर बढ़ाना।
 - वर्षों की डिक्टेक्चर देना।
 - आत्म निर्भर बनना।
 - स्वतंत्रता के समय देश की राजनीतिक बहस से हिस्सा लेना।
 - अपनी बेटी को उच्च शिक्षा के लिए कालिज भेजना।
 - देश की हालातों के बारे में अपनी बेटी से चर्चा करना।

छ) उत्तरः > वर्तमान परिवेष्य में यह बात शत प्रतिशत सही है कि परंपराएँ विकास के मार्ग में अवरोधक हो तो उन्हें ठोड़ा ही चाहिए। अगर हम सभी शिक्षा का उदाहरण लेते हैं तो परंपराओं के अनुसार उन्हें पाप समझा जाता या लोग सभी को शिक्षा नहीं देते ये परंतु वर्तमान में हम सभी को देखें तो ये

फूलों से हाथ चिला कर चल रही है। 'कल्पना चावला', 'प्रतिष्ठा देवी' सेहु पाटिल, आदि हमारी देवी की इन्हें विश्व स्तर पर प्रचलित लहरा रही इसालिए की उन्ने परंपराओं की तोड़ दिया। अतएव परंपराएँ विकास के मार्ग में अवरोध के बोझे उन्हें तोड़ना ही उचित है।

ग) अतएव 'प्राकृत लैवल अपदों की नहीं आपितु चुक्कीकूटों की भी भाषा वी। महारीर प्रसाद दिवेदी ने यह कहा वर्णोंकि:-

- ii) भारत की जात्ये री आधिक, जिन्हें संस्कृत कोडेन होमि के कारण नहीं आती वी, जबता प्राकृत भाषा का ही प्रयोग करते वी,
- iii) बौद्ध धर्म की ग्रन्थ 'स्त्रिपिटक' जो महाभारत से भी बड़ा है, प्राकृत भाषा में लिखा गया है,
- iv) अगर प्राकृत लैलवे वाले अनुपद वी, तो आज जितने भी स्वानीय भाषाः - बंगाली, झीजपुरी, अवधी, मैथिली आदि भाषा में चैपर प्रकाशित करते हैं, ते भी आवृद्धित हैं।

10

प्र) उत्तर :-

'संस्कृत' पाठ में लेखक ने समयता की कुछ इस तरह परिभाषित किया है। 'समयता' → संस्कृत मानव के हुआ ओं भी क्रान्ति विश्वास की रौज़ा, तकनीक आगे, हमें पुष्टि दी थी। फिर हम उसका प्रयोग अपने लिए करते हैं, उसे समयता कहते हैं।
 जैसे ब्यूटन जिसने गुफाओं की लल की प्रतिपादित किया, इसलिए वो संस्कृत मानव हुआ, और हम उसका प्रयोग अपने अनुसार करते हैं, इसलिए उसे समयता कहा जाय।

इ) उत्तर :-

'रात के तारों' की वह देखकर न सोक सकने वाले मनीषी की प्रवणता पुरस्कर्ता कहा गया है। वहोंकि इनके पास साने के लिए दीरी, पहनने के लिए कपड़ा, रहने के लिए घर होने के बाबजूद ये हमेशा रात के तारों में ये कुछ नया खोजना चाहते हैं। इनमें हमेशा कुछ नये खोजने की लालसा होती है। ये संस्कृत मानव होते हैं। इन्हें तारों से भरा घाल हमेशा ये कुछ नये खोजने की आकृक्षा की आशूत करते रहता है।

॥१॥ उत्तरः

क) :-

'सुगतृष्णा' → जब रोगिस्तान में सुग धानी हिरण की यासलगाती है तो वह इधर-उधर यास के कामा, पानी की खोज में शटकता रहता है। जब कहीं दूर उसे पानी प्राप्ति होता है, और वो वहाँ जाकर देखता है तो चारों ओर रेत होती है, और कसी झाम में शटकते हुए, उसकी मौत हो जाती है।

यहाँ सुगतृष्णा का अर्थ झाम के कप में लिया गया है, जो बड़े बनवे का झाम है, उसे ही यहाँ सुगतृष्णा कहा गया है।

ख) उत्तरः 'हर चारिका में लिपि एक रात हृष्णा है' : इसका तात्पर्य है कि हर घोरीमा वाले रात से पहले उद्याद अमावश्या की राती की ज्यादतर छोटी होती है, उसी प्रकार हर सुख के बाद या पहले कुँख जरूर होता है, लेकिन उस कुँख के बाद हम सुख की प्राप्ति अवश्य होती है।

ग) उत्तरः

'छाया' से काँच का तात्पर्य है 'पुराने अच्छी दिनों की लीटी हुयी स्मृती'। अगर मनुष्य को वर्तमान में कष्ट होता है तो वो इसे पुराने दिनों की स्मृतियों से लुजवा करता है, जिसके कामा उसे अत्याखिक कुँख होती है।

- 12) परशुराम की वृक्षागत विशेषता क्या है?
- (i) वे अपने दूर देव शंकर भी के लिए प्राण तक देने को तैयार रहते हैं।
- (ii) वे माता-पिता के अवन्य शक्ति वो, जिसके कारण उन्होंने 18 बार दाँड़ियों का गाढ़ा किया।
- (iii) महादानी:- 18 बार दाँड़ियों को गाढ़ा कर राज्य-पाठ ब्राह्मणों को दान दिया।
- (iv) गुण शक्ति।
- (v) ताकिंक वृक्षागत।
- (vi) अत्यधिक शावित्रशाली।

⑥) 'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता ही तो बेहतर है।' इसका अर्थ है 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संघाद' में देख सकते हैं। लक्ष्मण व परशुराम अत्यधिक बलशाली हीने के बाद भी रुक्मिणी को तरीं के माहूराम से अपमानित कर रहे थे। लक्ष्मण आग वो तो परशुराम थी। लेकिन श्री राम पानी वो। इनके पास सब कुछ हीते हुए भी खुद को परशुराम का पास लिया। इन्होंने अपनी शीतल वाणी से सभी का दिल जीत लिये। इनकी वाणी सजी के छुट्टियों को हु गयी। वर्योंकि ये विनम्र ही।

प्रयोग
ii) उत्तर: 'कृत्यादाव' कार्यिता में वस्तु और आवृष्टियों को शान्ति के लिए कहा गया है क्योंकि-

अब स्थियों की वस्तु और आवृष्टियों द्वारा उन्हें प्रसन्न कर दिया जाता है, लेकिन बाद में उन्हीं पर शोषण होता है। लोग उन पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। वस्तु, और आवृष्टियों से तो सिफ़ी उन्हें छानी दिया जाता है, जिन्होंने कोमलता, सातिवकता आदि की मुर्ति होती है और उनका शोषण किया जाता है।

iii) उत्तर: 'कृत्यादाव' कार्यिता में माँ ने बेटी की ऐसा कहा कि लड़की ही वह पर लड़की जैसा दिखाई मत देना क्योंकि स्थियों प्रेम, सौंदर्य, कोमलता, सचेतता, सातिवकता, प्रविश, की मुर्ति होती है। उनका काढ़ी सहृदय बड़ी को समाज, छोटों को व्यार व दूसरों की पेट की जवाला शांत करना रहता है, इसालिए माँ ने उसे लड़की बनने को कहा।

परंतु अब का समाज उनकी इस गुण के कारण उनका शोषण व उपर अत्याचार करता है, इसालिए उसे लड़की जैसा दिखाई मत देना कहा तथा अत्याचारों की सहृदय करना भी बाल्कि उसे

उचित ढंड या बहला के लिए को कहा है।

उत्तर: सोनातकर की आवाज में हिचक ही उसकी मनुष्यता, मानवता को दर्शाता है क्योंकि उसके पास भी मुख्य गायत्र दृतवा गुण होता है, लैंगिक वो इसे धन के मुख्य गायत्र की प्रतिक्षा को लिखरेवे में सदृ करता है। यह उसकी मनुष्यता है। यह उसकी हिचक नहीं, यह तो उसका बहुपाल है। जो खुद को रोकर, दूसरे को आजी बढ़ने देता है।

उत्तर: आज पूरे विश्व में प्रदूषण सबसे बड़ा आजी बढ़ता हुआ छतरा है। जिसके कारण आज हिमपात तक में कसी आ गयी है। प्रदूषण का अर्थ होता है हमारे पर्यावरण में हम तो छटक का गीलना, जो हम नहीं चाहते हैं तथा वो मिलकर पर्यावरण को कुशित ही करते हैं। इसके अपेक्षु प्रतिरोधाम है:-

- ⇒ अमलीय वर्षी
- ⇒ वर्षी का कम होना
- ⇒ औजोन परत का हास
- ⇒ कृषि पर्यावार कम होना

- v) शारीरिक अपेक्षा
- vi) जीव-जंतु का मरना
- vii) प्राकृतिक आपदा
- viii) गंशीर बिमारीयों आदि।

इसके रौकणाम् के लिए हम विनियोगिता कार्य कर सकते हैं:

- i) कम दूरी के लिए चैल या साइकल का प्रयोग कर
- ii) ज्ञानिक का कम प्रयोग कर
- iii) जैविक छाँड़ी कर
- iv) वृक्षारोपन कर
- v) जीवों का पर्यावरण के लिए जागरूक कर
- vi) नालियों, गंदे पानीयों का सही तरीके से फिलटरेट कर।
- vii) पुनरुत्थान अपना कर।
- viii) जीव कचड़ी की आदि तरह विपरारा कर।
- ix) अबैध कचड़े को सुख्यवस्थित ढंग से विपरारा कर।
- x) सौर ऊर्जा, पर्यावरणीय ऊर्जा अपना कर।
- xi) बाहर जाने समय विघ्नियों उपकरण को बढ़ा कर जाना चाहिए।
- xii) मोबाइल तथा फ़ोनेट का कम प्रयोग कर।

खंड - (२)

प्र० उत्तर :-

काल्प करे सो आज कर

काल्प करे सो आज कर, आज करे सो आज।
पल में परलये होते हैं, फैर करेगा कर ॥

भुमिका :- वर्तमान परिषेध्य में हमें आज सारे कार्य अपने सही र अचित वक्त पर कर लेना चाहिए। "काल्प करे सो आज कर" का अर्थ है ये तुम कल करना चाहते हो, उसे आज करो, जो आज करना है, उसे अब क्योंकि पल में प्रलय हो जाएँगा, फिर तुम कार्य को कर करो; हमें वक्त का मूल्य पहचानकर उसका सटुपयोग करना चाहिए।

संदर्भ :- आज हमें समय का सटुपयोग करना चाहिए ताकि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें हमें समय को पहचानकर उसके मूल्य को समझना चाहिए। वर्तमान या भूत या फिर शतिष्य वे छाते ही सफूल बन जाता है जिसे समय का सटुपयोग करना सीख लिया है, हम जितने भी बड़े व्यक्तियों

को देखते हैं और मुकेश अंगारी या फिर हमारे फ़िल्मोंमें भी अपना लक्ष्य प्राप्त किया है, तबोचे समय को पहचाना व इसका उचित उपयोग किया है। अगर हमें भी अपने लक्ष्यों के प्रति सचेत रहना है तो समय का सटुपयोग करना सीखना चाहिए। आज देश, समाज, जनता सभी की यही पुकार है। अगर हम समय का सटुपयोग करना चाहते हैं तो हमें वक्त पर सारा कार्य करना चाहिए। जीवन में अनुशासन लाकर हम इसका सटुपयोग कर सकते हैं। अगर हम दोष जीवन त्यागि कर रहे हैं तो उके निश्चित समय तालिका बनाकर करना। अगर जीवन में अनुशासन है तो हमारा कार्य तया हम स्वयं व्यवस्थित हो सकते हैं।

निष्कर्ष: अतरुद समय को हमें पहचानकर उचित अवसर का प्रयोग कर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। छुट्टी की राहदूर तथा बुक की सेवा में विहीन कर सकते। अनुशासन से हम स्वयं को व्यवस्थित कर लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जाते हैं। जीवन काल में समय की पहचानना ही सबसे बड़ा कार्य होता है हम पहचान गये हो सफलता हमारी कहा चुमारी है। समय व अनुशासन दोनों मिलकर हमारे जीवन की संगर देते हैं।

15/3/2015

पतरातू रोड, रॉची

811 क्र., मकान :- 81

822116

दिनांक :- 8 मार्च 2015.

पुष्य चिटानी,

सादर प्रणाम।

मैं गवाडय विश्वालय में अच्छे हँग से पढ़ रहा हूँ तथा आड़ा करता हूँ कि आप हँहों खुशी पुर्वक तथा स्वस्थ्य होंगे। माताजी श्री ठीक होंगी। कुछ साप्ताह पहले ही आपका पर प्राप्त हुआ का परंतु आज मुझसे उन शूल हो गयीं हैं, जिसके लिए मैं आपसे दमा माँगना चाहता हूँ।

चिटानी कुछ दिनों पहले मुझे अपने हाँटे भाइ से झड़प हो गयी थी।

शायद बाद में, मुझे लगा कि गलती मेरी ही थी, परंतु जब मैं उससे माँफी माँगने गया तो वो मुझसे बात नहीं कर रहा है। मुझे माफ कर दियी थिता थी, अविष्या में, मैं कोई ऐसी शुल नहीं करूँगा, जिसके करण हम दोनों आईयों के 'प्रेम भरे दिनों' में कोई गलत-कहमी आ जाए। अत मुझे माफ कर, उसे मुझसे बात करने के लिए प्रेरित कियी रखा हमारे फाइनल परीक्षा का परिणाम आ जाया है, हमें हमारों आई अच्छे नवर से पास है। अस्तित्व में लिखवा रहा कर रहा है।

~~बड़ों को प्रभाव, होटे को जुमा उत्तरीष,~~

आपका ध्यारा

झानिमेशा उत्तरीष।

आज्ञा
माता जी
गाप्त हुआ
लिल मैं
उप हो गयी था

16) व्यवस्था

पुलिस व्यवस्था

प्रत्येक देश में गारिकों की सुखा तथा कानून का पालन करने वाला पुलिस, सरकारी संस्था है। पुलिस के प्रशिक्षण के समय, सुहृद व कर्तव्यों को शिख कराया जाता है। प्रशिक्षण के बाद पुलिस समाज से चुनकर सर्वे शांति व्यवस्था कायम करती है। पुलिस के कर्तव्य ही इन्हे साहसी, बहादुर व फ़िरादार का परिक्षा लेती है। बहादुर पुलिस को पुरस्कृत की जाता है।

